भारतीय नृत्यकला

1. परिचय

- अंग-प्रत्यंग एवं मनोभावों के साथ की गई नियंत्रित यति-गति को नृत्य कहा जाता है।
- भरत मुनि (द्वितीय शताब्दी इसा पूर्व) का 'नाट्यशास्त्र' शास्त्रीय नृत्य पर प्राचीन ग्रंथ के रूप में उपलब्ध है, जो नाटक, नृत्य और संगीत कला की स्रोत-पुस्तक है।
- भारतीय नृत्यकला को दो वर्गों में बाँटा जाता है- (i) शास्त्रीय नृत्य (ii) लोक एवं जनजातीय नृत्य।
- भारतीय शास्त्रीय नृत्य की प्रमुख शैलियाँ 8 हैं- कत्थक, भरतनाट्यम, कत्थकली, मणिपुरी, ओडिसी, कुचीपुड़ी, सत्रीया एवं मोहिनीअट्टम।

2. भरतनाट्यम (तमिलनाडु)

- भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से जन्मी इस नृत्य शैली का विकास तमिलनाडु में हुआ।
- मंदिरों में देवदासियों द्वारा शुरू किये गए इस नृत्य को 20वीं सदी में रुक्मिणी देवी अरुंडेल और ई कृष्ण अय्यर के प्रयासों से पर्याप्त सम्मान मिला। यह भरतनाट्यम एकल स्त्री नृत्य है।
- इसमें नृत्य क्रम इस प्रकार होता है- आलारिपु (कली का खिलना), जातीस्वरम् (स्वर जुड़ाव), शब्दम् (शब्द और बोल), वर्णम् (शुद्ध नृत्य और अभिनय का जुड़ाव), पदम् (वंदना एवं सरल नृत्य) तथा तिल्लाना (अंतिम अंश विचित्र भंगिमा के साथ)।

3. कत्थकली (केरल)

- कत्थकली अभिनय, नृत्य और संगीत तीनों का समन्वय है।
- यह एक मूकाभिनय है जिसमें हाथ के इशारों और चेहरे की भावनाओं के सहारे अभिनेता अपनी प्रस्तुति देता है।
- इस नृत्य के विषयों को रामायण, महाभारत और हिन्दू पौराणिक कथाओं से लिया जाता है।
- केरल के सभी प्रारंभिक नृत्य व नाटक– चकइरकोथू, कोडियाट्टम, थियाट्टम, कृष्णाअट्टम, रामाअट्टम आदि कत्थकली की ही देन हैं।

4. कुचीपुड़ी (आंध्र प्रदेश)

- आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में कुचीपुड़ी नामक गाँव है जहाँ के द्रष्टा तेलुगू वैष्णव कवि सिद्धेन्द्र योगी ने यक्षगान के रूप में कुचीपुड़ी शैली की कल्पना की।
- कुचीपुड़ी में स्त्री-पुरुष दोनों नर्तक भाग लेते हैं और कृष्ण-लीला की प्रस्तुति करते हैं।
- कुचीपुड़ी में पानी भरे मटके को सिर पर रखकर पीतल की थाली में नृत्य करना बेहद लोकप्रिय है।

5. मोहिनीअट्टम (केरल)

- यह एकल महिला द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला ऐसा नृत्य है, जिसमें भरतनाट्यम तथा कत्थकली दोनों के कुछ तत्त्व शामिल हैं।
- धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान विष्णु ने भस्मासुर से शिव की रक्षा हेतु मोहिनी रूप धारण कर यह नृत्य किया था।

6. ओडिसी (ओडिशा)

- यह सबसे पुराने जीवित शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक माना जाता है।
- ओडिसी नृत्य में भगवान कृष्ण की प्रचलित कथाओं के आधार पर नृत्य होता है और इसमें धड़ संचालन तथा त्रिभंग पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

7. मणिपुरी (मणिपुर)

- मणिपुरी नृत्य भारत के अन्य नृत्यों से शारीरिक गति, भंगिमाओं, पैरों के संचालन आदि मामलों में बिल्कुल भिन्न है।
- इसमें प्रयुक्त वाद्य यंत्र करताल, मंजीरा और दो मुख वाला ढोल या मणिपुरी मृदंग होते हैं।
- मणिपुर का युद्ध संबंधी नृत्य 'थंग-ता' कहा जाता है।

8. सत्रीया नृत्य (असम)

- असम के 15वीं सदी के महान वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव ने मठों में 'अंकिया नाट' के सह-प्रदर्शन हेतु सत्रीया नृत्य विकसित किया।
- इस नृत्यशैली को संगीत नाटक अकादमी द्वारा 15 नवम्बर, 2000 को अपने शास्त्रीय नृत्य की सूची में शामिल किया गया जिससे शास्त्रीय नृत्यों की संख्या बढ़कर आठ हो गई है।

9. कत्थक (उत्तर प्रदेश)

- हिन्दू-मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक है-कत्थक नृत्य। कत्थक ही भारत का वह एकमात्र शास्त्रीय नृत्य है जिसका संबंध उत्तर भारत तथा मुस्लिम संस्कृति से रहा है।
- कत्थक का आशय कथा कहने से है, किंतु इसका नृत्य रूप तालबद्ध पदचाप, विहंगम चक्कर आदि द्वारा पहचाना जाता है।
- इस नृत्यशैली को संगीत के कई घरानों, यथा–जयपुर घराना, लखनऊ घराना, बनारस घराना का समर्थन मिला।
- 19वीं सदी में अवध के अंतिम नवाब वाज़िद अली शाह के संरक्षण में कत्थक का स्वर्णिम युग देखने को मिलता है।